



कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ज्ञानविविद्या

ISSN : 3048-4537(Online)

3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-4.5

Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026

Page No.- 100-103

©2026 Gyanvividha

<https://journal.gyanvividha.com>

Author's :

1. ब्रजेश कुमार ठाकुर

शोध छात्र : विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर.

2. डॉ. पुष्पा कुमारी

शोध-निर्देशक, (वरीय सहायक प्राध्यापिका) सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर, बिहार.

Corresponding Author :

ब्रजेश कुमार ठाकुर

शोध छात्र : विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर.

निरूपमा राय की कहानियों का सामाजिक-सांस्कृतिक एवं विमर्शमूलक अध्ययन (प्रतिरूप तुम्हारा के विशेष संदर्भ में)

साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं होता; यह समाज, संस्कृति और मानवीय अनुभवों का दर्पण होता है। भारतीय साहित्य में क्षेत्रीय जीवन और स्थानीय समाज को प्रस्तुत करने वाले कथाकारों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिहार के पूर्वी भाग में स्थित 'कोशी अंचल' का साहित्यिक और सामाजिक महत्व इसे एक विशेष अध्ययन का विषय बनाता है। इस क्षेत्र की कहानियों और कविताओं में जीवन के विविध पहलुओं-संघर्ष, आशाएँ, मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक विषमताओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

'निरूपमा राय' इस क्षेत्र की साहित्यिक धारा में एक प्रमुख नाम है। उनकी कहानियों में कोशी अंचल के जीवन, संस्कृति और संघर्षशील ग्रामीण समाज की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है। इस निबंध में हम कोशी अंचल का सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, निरूपमा राय की लेखनी, उनकी शैली, पात्र निर्माण, सामाजिक संदेश और साहित्यिक योगदान का गहन विश्लेषण करेंगे।

निरूपमा राय की कहानियों का सामाजिक-सांस्कृतिक एवं विमर्शमूलक अध्ययन प्रस्तुत करने के पूर्व कोशी अंचल की सामाजिक-सांस्कृतिक पहलु को जानना आवश्यक है।

विश्व के किसी भी जगह का नाम वहाँ के प्रतिनिधि व्यक्ति, जाति, संस्कृति, भाषा, पर्वत, पठार, नदी आदि के नाम पर होता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि ज्यादातर प्राचीन सम्यताओं का उद्गम और विकास नदी की घाटियों से हुआ है। जिस प्रकार सिन्धु नदी के नाम पर सिन्धु घाटी की सम्यता कहलाई, उसी प्रकार कोशी नदी के नाम पर वहाँ का निकटवर्ती क्षेत्र कोशी अंचल कहलाया।

प्राकृतिक धरोहर हिमालय के साथ ही कई भारतीय नदियों का जन्म हुआ। जर्मन विद्वान 'अल्फ्रेड बेग्र' का मानना है कि जहाँ आज हिमालय है, वहाँ पहले विशाल सागर था। बेग्र साहब के अनुसार

पच्चीस करोड़ वर्ष पहले भारतीय और यूरोपिया भूखण्डों के बीच जोरदार टक्कर से विशाल हिमालय पर्वत का निर्माण हुआ। इसी पर्वत के हिमशिला पिघलने से कई प्रमुख नदियाँ भारत में उतरी। कोशी भी उनमें से एक हिमनिःसृता नदी है।

भारतीय सभ्यता को नदी मातृक सभ्यता भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ नदियों को जीवन प्रदायनी माँ के रूप में देखा जाता है। वेदों और पुराणों के अनुसार जो महिमा गंगा, युमना और नर्मदा की है, वही महिमा कोशी नदी की है। इन ग्रन्थों में इसे 'कौशिकी' नाम दिया गया है। यह एक देवपावन नदी है। इसके किनारे कई ऋषि-मुनियों के आश्रम थे, जिनमें धर्म और दर्शन का प्रवाह होता था। कहा जाता है कि कुशि ऋषि के शिष्य विश्वामित्र को कोशी नदी के किनारे ही ऋषि का दर्जा मिला था। विश्वामित्र को ऋग्वेद में कौशिकी भी कहा गया है। "वैदिक ऋषि विश्वामित्र की बहन सत्यवती अपने चांचल्य दोष के कारण पश्चाताप के वरीभूत हो कोशी नदी में परिणत हो गई थी। उसके सहोदर भाई विश्वामित्र ने अपनी बहन के स्नेहवश कौशिकी क्षेत्र को ही अपनी तपोभूमि बनाया था।" जैसा कि स्वयं उन्होंने दाशरथी राम से कहा है- "ततोहं हिमवत्पाष्ठर्वे वसामि निरतः सुखम्।/भगिन्या स्नेह संयुक्तः कौशिल्यां सघुनंदनः ॥"² (वाल्मीकि रामायण) और इसी कौशिकी तट पर तपस्या कर विश्वामित्र ने क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया था। यथा - "बहुमूल फलाचापि कौशिकी भरतवर्षम्।/विश्वामित्रोऽभ्यगाद यत्र ब्राह्मणत्वं तपोधनं ॥"³ (महाभारत, वनपर्व) इन प्रसिद्धियों के कारण ही प्राचीन काल से ही कोशी के दोनों तटों के भू प्रदेशों को 'कौशिक' कहा जाने लगा। यही 'कौशिक' या 'कौशिकी कच्छ' आज कोशी अंचल के नाम से जाना जा रहा है।

निरुपमा राय की कहानी 'प्रतिरूप तुम्हारा' हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं और सांस्कृतिक धारा को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करती है। यह कहानी न केवल एक स्त्री के जीवन की गहराईयों में उतरती है, बल्कि भारतीय समाज के जटिल रिवाजों, मान्यताओं और पारंपरिक बंधनों को भी उजागर करती है। इस कहानी का सांस्कृतिक और सामाजिक विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे हमारे समाज में व्यक्ति, विशेष रूप से स्त्री, को उसकी पहचान, आत्ममूल्यता और अधिकारों के संदर्भ में संघर्ष करना पड़ता है।

प्रतिरूप तुम्हारा एक संवेदनशील और गहन कहानी है जो स्त्री के मानसिक और भावनात्मक संघर्ष को केन्द्रित करती है। कहानी की नायिका एक ऐसी महिला है, जो अपने पति के साथ अपने वैवाहिक जीवन में असंतोष और आत्मपीड़न से जूँझ रही है। उसका जीवन परिवार और समाज के परंपराओं और अपेक्षाओं के बीच बंधा हुआ है। कहानी में निरुपमा राय ने उस स्त्री के मनोविज्ञान को उजागर किया है जो अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पहचान की खोज में असमंजस में है।

कहानी का मूल संदेश यह है कि स्त्री को अक्सर अपने व्यक्तित्व की खोज में समाज और परिवार द्वारा निर्धारित प्रतिमानों से संघर्ष करना पड़ता है। यहाँ पर 'प्रतिरूप' शब्द का प्रयोग केवल बाहरी रूप की समानता के लिए नहीं किया गया है, बल्कि यह आंतरिक और मानसिक रूप से किसी व्यक्ति के प्रतिबिंब, उसके जीवन के अनुभव और उसके अस्तित्व के साक्षात्कार का प्रतीक है।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य : "भारत में पारंपरिक समाज में स्त्री को अक्सर एक आदर्श पत्नी, माँ और बहन के रूप में देखा जाता है। उसे अपनी पहचान और अस्तित्व को समाज की स्वीकृत भूमिकाओं में समेटने की उम्मीद होती है। निरुपमा राय की कहानी इसी सामाजिक परिप्रेक्ष्य की गहरी पड़ताल करती है। कहानी की नायिका का संघर्ष यही है कि वह इस परंपरागत छवि से बाहर निकलकर अपने व्यक्तित्व की पहचान करना चाहती है। उसे यह महसूस होता है कि उसके जीवन की वास्तविकता उसकी आत्मा से मेल नहीं खाती। यह द्वंद्व सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि समाज के स्तर पर भी गहरे प्रभाव डालता है। क्योंकि समाज की सबसे बड़ी चिंता यही होती है कि स्त्री अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर न निकल जाए और उसकी छवि समाज के स्वीकृत मानकों से मेल खाती रहे।"⁴

कहानी में इस तनाव को बहुत ही सूक्ष्म तरीके से दिखाया गया है, जब नायिका अपनी भूमिका को लेकर आत्ममंथन करती है और समाज के भीतर व्याप्त दोहरे मापदंडों का सामना करती है। वह एक और अपने व्यक्तिगत संघर्षों से जूँड़ रही होती है, और दूसरी ओर उसके ऊपर पारिवारिक और सामाजिक दबाव भी होता है। यही सामाजिक-सांस्कृतिक द्वंद्व कहानी की शक्ति है।

स्त्री की मानसिकता और सामाजिक स्वीकृति : कहानी में नायिका के मानसिक संघर्ष को बहुत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। उसकी मानसिक स्थिति यह दर्शाती है कि कैसे पारंपरिक और आधुनिक सोच के बीच एक महिला का जीवन उलझकर रह जाता है। नायिका का आत्म मूल्यांकन और उसकी पहचान की खोज उसके मानसिक संघर्ष को तीव्र बनाती है। वह एक और अपने पति से प्यार करती है, लेकिन दूसरी ओर उसे लगता है कि उसका जीवन केवल दूसरे लोगों के मुताबिक जीने से ही पूरा नहीं हो सकता। उसकी अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को समाज और परिवार द्वारा हमेशा नजरअंदाज किया गया है। यह मानसिक अवस्था एक सामान्य भारतीय महिला के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है, जिसे निरूपमा राय ने अपनी कहानी के माध्यम से बहुत सहजता से प्रस्तुत किया है।

इसके साथ ही कहानी यह भी संकेत करती है कि समाज में एक महिला को उसके गुणों और क्षमताओं के बजाय उसकी सामाजिक भूमिका के आधार पर परखा जाता है। महिला के व्यक्तित्व को अक्सर उसकी बाहरी भूमिका से जोड़ा जाता है, और उसे अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने का पूरा मौका नहीं मिलता। यह मानसिक रूप से उसे दबाता है और आत्ममूल्य की कमी का कारण बनता है।

सामाजिक ढांचे और पारंपरिक भूमिकाएँ : 'प्रतिरूप तुम्हारा में पारिवारिक ढांचे और समाज के प्रति नायक और नायिका दोनों की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पारंपरिक समाज में महिलाओं की भूमिका को परिवार और विवाह तक सीमित कर दिया गया है। पति की अपेक्षाएँ, परिवार की जिम्मेदारियाँ, और समाज का दबाव उस महिला की स्वतंत्रता को सीमित कर देते हैं। निरूपमा राय के द्वारा नायिका के मानसिक संघर्ष का चित्रण इस बात को प्रमाणित करता है कि महिलाओं को अक्सर अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कहानी में यह संघर्ष एक तरह से पुरुष प्रधान समाज की आलोचना करता है, जिसमें स्त्री को एक आदर्श रूप में ढाला जाता है और उसकी वास्तविक इच्छाओं और आकांक्षाओं की अनदेखी की जाती है।'⁵

यह भी देखा जाता है कि समाज और परिवार की स्वीकृति और पहचान के लिए महिला को अपनी इच्छा, स्वतंत्रता और आत्ममूल्यता को बलिदान करना पड़ता है। महिला को हमेशा यह संदेश दिया जाता है कि उसके जीवन का उद्देश्य परिवार की सुख-शांति और समाज के आदर्शों को बनाए रखना है। उसकी व्यक्तिगत इच्छाएँ, आस्थाएँ और भावनाएँ समाज के लिए गौण होती हैं।

कहानी में नारीवाद का संकेत : प्रतिरूप तुम्हारा कहानी नारीवाद के तत्वों से भी ओत-प्रोत है। नायिका का यह मानसिक संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज की उस मानसिकता को चुनौती देता है, जो स्त्री को उसकी व्यक्तिगत पहचान बनाने का अवसर नहीं देती। नायिका का आत्म मूल्यांकन इस समाज की आलोचना करता है, जो हमेशा महिलाओं को एक छवि में बांधने की कोशिश करता है। स्त्री के अस्तित्व को पहचानने और उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की खोज के संदर्भ में यह कहानी नारीवादी दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करती है। नारीवाद का अर्थ सिर्फ महिलाओं के अधिकारों की मांग नहीं है, बल्कि यह उनके व्यक्तिगत और मानसिक स्वातंत्र्य की आवश्यकता को भी इंगीत करता है। निरूपमा राय ने इस कथा में स्त्री के जीवन के विभिन्न पहलुओं को खंगालते हुए यह स्पष्ट किया है कि महिला के लिए उसकी पहचान केवल समाज के नियमों से तय नहीं हो सकती।

कहानी 'प्रतिरूप तुम्हारा' का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण यह दर्शाता है कि कैसे भारतीय समाज में

महिलाओं को अपनी वास्तविक पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। निरुपमा राय ने इस कहानी के माध्यम से एक स्त्री के मानसिक संघर्ष, उसकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को उजागर किया है, जो समाज और पारिवारिक दबावों से जूझती हैं। कहानी न केवल महिलाओं के अधिकारों की बात करती है, बल्कि यह भारतीय समाज के उन सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं पर भी प्रश्न उठाती है, जो स्त्री की पहचान को सीमित और नियंत्रित करते हैं।

यह कहानी समाज के उन आंतरिक दबावों को उजागर करती है, जो किसी भी व्यक्ति, खासकर महिला, की स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं। निरुपमा राय ने इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि समाज और संस्कृति की मान्यताएँ एक व्यक्ति की पहचान और अस्तित्व के लिए बाधा नहीं बन सकतीं, और हर व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार है।

निरुपमा राय की कहानी 'प्रतिरूप तुम्हारा' का सामाजिक-सांस्कृतिक एवं विमर्शमूलक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह कृति केवल एक स्त्री के निजी जीवन की कथा नहीं है, बल्कि भारतीय समाजकृविशेषतः कोशी अंचलकृकी पितृसत्तात्मक संरचना, पारंपरिक मूल्यों और स्त्री-अस्मिता के संघर्ष का सशक्त दस्तावेज़ है। कहानी में स्त्री की मानसिक पीड़ा, आत्मसंघर्ष और पहचान-खोज को जिस सूक्ष्मता और संवेदनशीलता से उकेरा गया है, वह इसे समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

यह अध्ययन दर्शाता है कि पारंपरिक सामाजिक ढाँचे में स्त्री को पूर्वनिर्धारित भूमिकाओं पर्ली, माँ और बहन तक सीमित कर दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसकी व्यक्तिगत इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और आत्ममूल्य दब जाते हैं। 'प्रतिरूप' का प्रतीकात्मक प्रयोग स्त्री के बाहरी रूप और आंतरिक यथार्थ के बीच विद्यमान द्वंद्व को उजागर करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज द्वारा आरोपित पहचान स्त्री के वास्तविक अस्तित्व से मेल नहीं खाती। कहानी में नारीवादी चेतना का स्वर आक्रामक न होकर मनोवैज्ञानिक और वैचारिक है, जो स्त्री के आत्मसंथन के माध्यम से पितृसत्तात्मक सोच को चुनौती देता है। निरुपमा राय यह स्थापित करती हैं कि स्त्री की पहचान समाज के नियमों और अपेक्षाओं से नहीं, बल्कि उसकी चेतना, अनुभव और आत्मबोध से निर्मित होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'प्रतिरूप तुम्हारा' सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कथा है, जो स्त्री-जीवन की जटिलताओं, मानसिक संघर्ष और स्वतंत्रता की आकांक्षा को उजागर करती है। यह कहानी न केवल स्त्री-विमर्श को समृद्ध करती है, बल्कि भारतीय समाज को आत्मावलोकन के लिए भी प्रेरित करती है कि वह स्त्री को एक स्वतंत्र और पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करे।

संदर्भ-सूची :

1. तिवारी, डॉ. वरुण कुमार, कोसी अंचल का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, दिल्ली : आयुष पब्लिशिंग हाउस, 2019, पृ.-75.
2. वाल्मीकि, रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ.-80.
3. वेदव्यास, 'महाभारत (वनपर्व)' गीताप्रेस, गोरखपुर. पृ.-220.
4. वर्मा, सुधा, हिंदी साहित्य में नारी विमर्श, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2023, पृ.-55.
5. तिवारी, डॉ. वरुण कुमार, कोसी अंचल का सृजनात्मक हिन्दी साहित्य, दिल्ली : आयुष पब्लिशिंग हाउस, 2019, पृ.-120.

•